अध्याय – 16

वानिकी शिक्षा

वन उत्पादों की निरन्तर बढ़ती हुई मांग के साथ उत्पादकता वृद्धि एवं उपलब्ध वन संसाधनों के अधिक सक्षम उपयोग करना समय की आवश्यकता हैं। इन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए, विद्यमान प्रबन्धन पद्धतियों में सुधार तथा नई प्रौद्योगिकियां एवं दक्षता हासिल करना आवश्यक हो गया है। अत: वैज्ञानिक वानिकी की प्रगति के लिए वानिकी शिक्षा की भूमिका प्रधान है। अनुसंधान और शिक्षा की प्रगति साथ-साथ करने तथा व्यावसायिक लाभों के उच्च स्तर हासिल करने की दृष्टि से, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून को दिसम्बर, 1991 में सम विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। वानिकी शिक्षा के समन्वयन एवं सामान्य पर्यवेक्षण के लिए 1993 में भा.वा.अ.शि.प. एक पूर्ण विकसित शिक्षा निदेशालय सृजित किया गया।

निदेशालय के मुख्य कार्यकलाप निम्न हैं:

1. व०अ०सं० - सम विश्वविद्यालय का पर्यवेक्षण, जो वर्तमान में वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन) तथा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम; रोपण प्रौद्यागिकी एवं लुगदी तथा कागज प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम; वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर डॉक्टरल कार्यक्रमों को संचालित कर रहा है।
2. प्रशिक्षित मानव संसाधन के सृजन के लिए शैक्षिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करना।
3. वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों को सहायता देना।
4. शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर परामर्श देना।
5. व्यावसायिक दक्षता विकास कार्यक्रमों का आयोजन करना।
6. विश्वविद्यालयों/स्कूलों में वानिकी शिक्षा पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण एवं विकास करना।
7. औपचारिक शैक्षिक माध्यम से वानिकी पाठ्यक्रम को मान्यता देना जिससे वानिकी में डिग्री प्राप्त की जा सके।
8. अनुसंधान शिक्षावृत्तियां देना।
9. मानव संसाधन विकास कार्यकलापों आदि का आयोजन करना। वर्ष 1997-98 के दौरान उपलब्धियां निम्न प्रकार है :

1. डॉक्टरल एवं पोस्ट-डॉक्टरल कार्यक्रम

वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अधीन विभिन्न संस्थानों में वानिकी के विभिन्न विषय क्षेत्रों में डॉक्टरल तथा पोस्ट-डॉक्टरल अनुसंधान कार्यक्रमों में, सक्रियता से जुटा है। परिषद् अभ्यर्थियों के लिए अनुसंधान छात्रवृत्तियां उपलब्ध कर इन कार्यक्रमों के लिए धन उपलब्ध करा रही है। 1997-98 के दौरान, 28 अभ्यर्थियों को डॉक्टरेट डिग्री प्रदान की गई।

2. अनुसंधान शिक्षावृत्तियां

वर्ष 1997-98 के दौरान भारतीय वानिकी, अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अधीन विभिन्न संस्थानों में कार्यरत अनुसंधान अध्येताओं/सह अनुसंधानकर्ताओं की कुल संख्या इस प्रकार थी:

कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	:	125
वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता	:	14
सहअनुसंधानकर्ता/पोस्ट-डॉक्टरल अध्येता	:	27

अनुसंधान अध्येता एवं अनुसंधानकर्ता वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान कार्यक्रमों का संचालन कर रहे हैं तथा वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों के लिए भावी कार्य बल बनाने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

3. स्नातकोत्तर डिप्लोमा एवं डिग्री पाठ्यक्रम

इस समय व०अ०सं० सम विश्वविद्यालय निम्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है:

(क) एक साल का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

(अ) रोपण प्रौद्योगिकी (ब) लुगदी और कागज प्रौद्योगिकी

(ख) दो साल का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

(अ) एम.एस.सी. वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन)

(ब) एम.एस.सी. काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

वर्तमान सत्र (1997-98) में छात्रों की संख्या इस प्रकार है:

रोपण प्रौद्योगिकी	:	17
रोपण एवं कागज प्रौद्योगिकी	:	10
एम एस सी वानिकी (अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन)		
दूसरे वर्ष (96-98 बैच)	:	12
पहले वर्ष (97-99 बैच)	:	19

एम एस सी काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

दूसरे वर्ष (96-98 बैच)	:	14
पहले वर्ष (97-99 बैच)	:	10

वर्ष 1997-98 के पाठ्यक्रम के दौरान उत्तीर्ण छात्रों की संख्या इस प्रकार है:

रोपण प्रौद्यागिकी	:	16
लुगदी एवं कागज प्रौद्योगिकी	:	16

यह उल्लिखित किया जा सकता है कि अब तक स्नातकोत्तर डिप्लोमा पास सभी छात्र निजी/सरकारी क्षेत्रों में समायोजित हो चुके हैं और वन आधारित उद्योगों एवं वृक्ष उत्पादकों के लिए उत्कृष्ट कार्य बल सिद्ध हुए हैं।

4. विदेश प्रशिक्षण

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के वनविदों/वैज्ञानिकों को नवीनतम प्रशिक्षण और शैक्षिक जानकारियां उपलब्ध कराने के लिए, अल्पकालीन और दीर्घकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, बैठकों/सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं हेतु, विदेश जाने की व्यवस्था की गई।

नवीनतम विकास एवं अनुसंधान तथा शैक्षिक रणनीतियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक देशों के अध्ययन दौरे किए गए। विभिन्न वानिकी अनुसंधान एवं शैक्षिक सहायता कार्यक्रमों के तहत विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, ब्रिटिश काउन्सिल, आई.डी.आर.सी., एफ.ए.ओ., आई.एन.बी.ए.आर, यू.एस.डी.ए. द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

खोज प्रबन्ध	1994-95	1995-96	1996-97	1997-98
अध्ययन दौरे	6	23	22	20
3 महीने	66	50	50	21
9-12 महीने	3	4	3	8
खोज का उपयोग				
अध्ययन दौरे	9	22	4	20
3 महीने	63	37	11	15
12 महीने	3	4	2	2

5. राष्ट्रीय प्रशिक्षण

उपमहानिदेशक (शिक्षा), सहा० महानिदेशक (शिक्षा), एन.पी.डी. (अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण) तथा शिक्षा निदेशालय से सम्बद्ध एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मानव संस्थान विकास में गुण - विवेचन पाठ्यक्रम (एप्रीसिएशन कोर्स) में दस दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया । यह पाठ्यक्रम शिक्षा निदेशालय, जो भा०वा०अ०शि०प० हेतु मानव संसाधन विकास योजना के विकास के लिए उत्तरदायी है, के अधिकारियों के लिए बहुत उपयोगी था।

मैसर्स विमको सीडलिंग लिमिटेड द्वारा 10 व्यक्तियों (व०अ०सं० तथा उ०कटिव०अ०स० प्रत्येक से 5) को पौधशालाओं की स्थापना में प्रशिक्षित किया गया।

निदेशालय ने 6,428 मिलियन रूपये लागत की एक प्रशिक्षण योजना को अन्तिम रूप दिया तथा स्वीकृति के लिए विश्व बैंक को प्रस्तुत किया। विश्व बैंक से स्वीकृति मिलने के उपरान्त प्रशिक्षण आयोजित करने की प्रक्रिया शुरू की गई। कंप्यूटर दक्षताओं को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु विभिन्न संस्थानों को रू० 7,285 लाख रूपये की राशि दी गई। कंप्यूटरों में प्रशिक्षत व्यक्तियों की संख्या इस प्रकार है:

1.	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून	:	125
2.	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर	:	80
3.	उष्णकटिबन्धीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर	:	30
4.	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन संस्थान, कोयम्बटूर	:	46

6. विभिन्न विश्वविद्यालयों के लिए तकनीकी एवं वित्तीय सहायता

वानिकी विद्याक्षेत्र में शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए, निम्न विश्वविद्यालयों को 110 लाख रूपये तक की तकनीकी एवं वित्तीय सहायता दी गई:

1. पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना
2. कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़
3. गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
4. हेमवतीनन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

7. पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या विकास

तीन चयनित विश्वविद्यालयों, यथा - तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, वाई०एस० परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय तथा बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के पाठ्यक्रम के वर्तमान स्तर से सम्बन्धित अध्ययन करने के लिए नियुक्त परामर्शदाताओं की रिपोर्ट्स निदेशालय को प्राप्त हो गयी है। रिपोर्ट्स का विश्लेषण किया

गया तथा विचारार्थ विषय तैयार किए गए । इन्हें विश्व बैंक की संस्तुति के लिए प्रस्तुत किया गया । प्रस्तावित विचारार्थ विषयों को विश्व बैंक ने मार्च, 1998 में अपने पुनरीक्षण मिशन के दौरान स्वीकृत दी।

8. मानव संसाधन विकास योजना

दो परामर्शदाताओं द्वारा प्रस्तुत एप्रोच पेपरों का अध्ययन किया गया और परामर्श के लिए विचारार्थ विषय तैयार किए गए। विचारार्थ विषय की संस्तुति के बाद, परामर्श देने की प्रक्रिया शुरू की गई। आपसी समझौते के बाद, भा.वा.अ.शि.प. के लिए एक मानव संसाधन विकास योजना तैयार करने हेतु व्यावहारिक मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

परामर्शदाता ने कर्मचारियों के लिए निर्मित प्रश्नावलियां परिचालित की। उन्होंने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर और वर्षा एवं नम पर्णपाती वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट का भी भ्रमण किया ताकि इन सस्थानों में तत्स्थान मानव संसाधन विषयों का मूल्यांकन किया जा सके। आशा है परामर्शदाता शीघ्र ही मसौदा रिपोर्ट प्रस्तुत करेगें।